درودِ معــــراج
و
فضائلِ درود و سلام

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِکْ عَلٰی حَبِیْبِکَ مُحَمَّدٍ وَّاٰلِہٖ صَلاۃً کَمَا تُصَلِّیْ بِحَسْبِ شَانِکَ

آفتابِ حرم، تاجدارِ حرم، پیکرِ اتم، آقائے محتشم ﷺ نے فرمایا! ''جس نے میرے حق کی تعظیم کے لیے مجھ پر درود بھیجا اللہ اس درود پاک سے ایک فرشتہ پیدا فرماتا ہے، جس کا ایک پر مشرق میں اور دوسرا مغرب میں۔ اس کے پاؤں سب سے نچلی ساتویں زمین میں ٹھہرے ہوئے ہیں اور اس کی گردن عرش کے نیچے لپٹی ہوئی ہے۔ اللہ تعالیٰ اسے فرماتا ہے! میرے بندے پر درود بھیج جس طرح اس نے میرے نبی ﷺ پر درود بھیجا، پس وہ بندے پر قیامت تک درود بھیجتا رہے گا۔'' (مطالع المسرات)

आफताबे हरम, ताजदारे हरम, पेकरे अतम, आक़ा-ए मोहतशम ﷺ ने फरमाया! ''जिस ने मेरे हक़ की ताज़ीम के लिए मुझ पर दरूद भेजा अल्लाह उस दरूद पाक से एक फरिशता पैदा फरमाता है, जिस का एक पर मशरिक़ में और दूसरा मग़रिब में। इस के पाओं सब से निचली 7वीं ज़मीन में ठेहरे हुए हैं और उस की गर्दन अर्श के नीचे लेपटी हुई है। अल्लाह तआला उस से फरमाते हैं! मेरे बन्दे पर दरूद भेज जिस तरह उस ने मेरे नबी ﷺ पर दरूद भेजा, पस वो बन्दे पर क़यामत तक दरूद भेजता रहेगा''। (मुतालेआ अलमुसरात)

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِکْ عَلٰی حَبِیْبِکَ مُحَمَّدٍ وَّاٰلِہٖ صَلاۃً کَمَا تُصَلِّیْ بِحَسْبِ شَانِکَ

انسانیت کے محسن، تجلیات کے مخزن، خوشبو خوشبو جن کا دامن، آقائے من، اُمید

کی کرن ﷺ نے فرمایا! ''جس نے مجھ پر ایک مرتبہ درود بھیجا اللہ اس پر دس مرتبہ درود بھیجتا ہے اور جس نے مجھ پر دس مرتبہ درود بھیجا اللہ اس پر سو مرتبہ درود بھیجتا ہے اور جس نے مجھ پر ہزار مرتبہ درود بھیجا جنت کے دروازہ پر اس کا کندھا میرے کندھے کے ساتھ ہوگا''۔(مطالع المسرات)

इंसानियत के मोहसिन, तजल्लियात के मख़ज़न, खुशबू-खुशबू जिन का दामन, आक़ा-ए मन, उम्मीद की किरन ﷺ ने फरमाया! ''जिस ने मुझ पर एक मर्तबा दरूद भेजा अल्लाह उस पर दस मर्तबा दरूद भेजता है और जिस ने मुझ पर दस मर्तबा दरूद भेजा अल्लाह उस पर सौ मर्तबा दरूद भेजता है और जिस ने मुझ पर हज़ार मर्तबा दरूद भेजा जन्नत के दरवाज़े पर उस का कंधा मेरे कंधे के साथ होगा। (मुतालेआ अलमुसरात)

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِکْ عَلٰی حَبِیْبِکَ مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ صَلاۃً کَمَا تُصَلِّیْ بِحَسْبِ شَانِکَ

بحرِ جود وسخا، دافعِ جملہ بلا، جانِ صدق وصفا، کنزِ لطف وعطا ﷺ نے فرمایا! ''جو مجھ پر ایک بار درود بھیجتا ہے اللہ اس پر دس بار درود بھیجتا ہے۔ اس کے بعد آسمانِ دنیا کے رہنے والوں کو اس کے درود سے متعارف کروایا جاتا ہے اور انہیں اس درود کے پڑھنے میں شریک کیا جاتا ہے۔ اور درود پاک پڑھنے والے پر سو بار درود وسلام بھیجا جاتا ہے۔ پھر آسمانِ دوم سے اس درود پاک پڑھنے والے کا تعارف کرایا جاتا ہے اور وہاں کے لوگ اس شخص پر بائیس بار درود بھیجتے ہیں۔ اسی طرح آسمانِ سوم کے لوگوں کو اس کے درود پر واقف کیا جاتا ہے اور وہاں کے لوگ اسی طرح اس شخص پر ہزار بار درود بھیجتے ہیں۔ اس درود کو آسمان چہارم کے لوگ سنتے ہیں تو دو ہزار بار درود بھیجتے ہیں۔ اس آواز کو جب آسمان پنجم کے لوگ سنتے ہیں تو وہ جواب میں پانچ ہزار درود پڑھتے ہیں۔ آسمان ششم کے لوگ جب اس درود پاک کی آواز سنتے ہیں تو وہ چھ ہزار بار درود پاک پڑھتے ہیں۔ آسمان ہفتم کے لوگ اس درود پاک کے جواب میں سات ہزار بار درود پاک پڑھتے ہیں۔ اس کے بعد اللہ تعالیٰ فرماتا ہے! ان تمام درود وسلام کا

ثواب میرے اس بندے کو عطا کیا جائے جس نے میرے ﷺ پر درود پڑھا تھا۔ میں اعلان کرتا ہوں کہ اس کے تمام گناہ بخش دیئے گئے ہیں۔ یہ اعزاز میرے نبی ﷺ پر درود پڑھنے کی وجہ سے ہے''۔(معارج النبوۃ)

बहरे जूदो सखा, दाफि-ए जुमला बला, जाने सदक़े व सफा, कन्ज़े लुत्फ व अता ﷺ ने फरमाया! ''जो मुझ पर एक मर्तबा दरूद भेजता है अल्लाह उस पर दस बार दरूद भेजता है। उस के बाद आसमाने दुनिया के रहने वालों को उस के दरूद से मुताअरिफ करवाया जाता है और उन्हें उस दरूद के पढ़ने में शरीक किया जाता है और दरूद पाक पढ़ने वाले पर सौ बार दरूद व सलाम भेजा जाता है! फिर आसमाने दोम से उस दरूद पाक पढ़ने वाले का ताअरूफ कराया जाता है और वहाँ के लोग उस शख़्स पर बाईस बार दरूद भेजते है। इस तरह आसमाने सोम के लोगों को उस के दरूद पर वाक़िफ किया जाता है और वहाँ के लोग इसी तरह उस शख़्स पर हज़ार बार दरूद भेजते हैं। इस दरूद को आसमाने चाहरम के लोग सुनते हैं तो दो हज़ार बार दरूद भेजते हैं। उस अवाज़ को जब आसमाने पंजम के लोग सुनते हैं तो वह जवाब में पाँच हज़ार दरूद पड़ते हैं। आसमाने शिशम के लोग जब उस दरूद पाक की अवाज़ सुनते हैं तो वह छे हज़ार बार दरूद पाक पढ़ते हैं। आसमाने हफतुम के लोग इस दरूद पाक के जवाब में सात हज़ार बार दरूद पाक पड़ते हैं। उस के बाद अल्लाह तआला फरमाता है। इस तमाम दरूद व सलाम का सवाब मेरे उस बन्दे को अता किया जाए जिस ने मेरे नबी ﷺ पर दरूद पढ़ा था। में ऐलान करता हूँ के उस के तमाम गुनाह बख़्श दिए गए हैं। यह ऐज़ाज़ मेरे नबी ﷺ पर दरूद पढ़ने की वजह से हैं। (मआरिज अल-नबूवत)

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِکْ عَلٰی حَبِیْبِکَ مُحَمَّدٍ وَّاٰلِہٖ صَلاَۃً
کَمَا تُصَلِّیْ بِحَسْبِ شَانِکَ

بعض روایات میں ذکر کیا گیا ہے کہ!''جب ایماندار مرد یا عورت بے بسوں

کے یاور، سید و برتر، بدر منور، بندہ پرور ﷺ پر درود بھیجنا شروع کرتے ہیں تو ان کے لیے آسمانوں اور زمینوں کے دروازے عرش تک کھول دیئے جاتے ہیں۔ آسمان کا ہر فرشتہ اللہ تعالیٰ کے حبیب ﷺ پر درود بھیجتا ہے اور تمام فرشتے اس مرد یا عورت کے لیے دعائے مغفرت کرتے ہیں جس قدر خدا کو منظور ہوتا ہے''۔ (مطالع المسرات)

बाज़ रिवायात में ज़िक्र किया गया है की! ''जब ईमानदार मर्द या औरत बे-बसो के यावर, सय्यद व बरतर, बदर मुनव्वर, बन्दा परवर ﷺ पर दरूद भेजना शुरू करते हैं तो उस के लिए आसमानों और ज़मीनों के दरवाज़े अर्श तक खोल दिए जाते हैं। आसमान का हर फरिश्ता अल्लाह तआला के हबीब ﷺ पर दरूद भेजता है और तमाम फरिश्ते उस मर्द या औरत के लिए दुआ-ए मग़फिरत करते हैं जिस क़द्र खुदा को मंज़ूर होता है''। (मुतालेआ अलमुसरात)

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى حَبِيْبِكَ مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ صَلَاةً كَمَا تُصَلِّيْ بِحَسْبِ شَانِكَ

حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ سے مروی ہے کہ ''جب کوئی مؤمن جو ہر آئینہ تجلیات، کانِ لعلِ کرامت، جمال روحِ حیات، جمیع البرکات ﷺ پر درود پاک بھیجتا ہے تو اللہ تعالیٰ ایک فرشتے کو مقرر کرتا ہے جو اس درود پاک کے تحفے کو فوراً سرکار دو عالم ﷺ کے سامنے لے آتا ہے اور برملا کہتا ہے! یا رسول اللہ ﷺ! فلاں بن فلان یا فلاں بنت فلاں نے آپ ﷺ پر ایک بار درود پاک بھیجا ہے۔ حضور ﷺ نہایت فرحت و شادمانی کے ساتھ جواب دیتے ہیں! میری طرف سے اسے دس بار سلام پہنچاؤ اور اسے پیغام دے دو کہ اگر ان دس میں سے ایک بھی تیرے ساتھ ہوگا تو تو جنت میں میرے ساتھ ایسے ہوگا جیسے یہ سبابہ اور وسطی انگلیاں ہیں اور تیرے لیے میری شفاعت حلال ہوگی۔ وہ فرشتہ روضۂ رسول ﷺ سے بارگاہِ خداوندی میں حاضر ہوتا ہے اور عرض کرتا ہے، اے اللہ! فلاں بندے نے تیرے حبیب ﷺ پر ایک بار درود پاک بھیجا ہے۔ اللہ تعالیٰ فرماتا ہے! میری طرف سے اسے دس بار ہدیہ سلام بھیجا جائے اور اسے بشارت دی

جائے کہ اگر ان دس میں سے ایک بھی تیرے ساتھ ہوگا تو تجھے آگ نہ چھوئے گی۔ پھر اللہ تعالیٰ اعلان فرماتے ہیں! کہ میرے بندے کے درود کو بہترین ہدیہ تصور کیا جائے اور اسے علیین میں محفوظ کر لیا جائے۔ تاکہ قیامت کے دن اسکے لیے ذخیرۂ آخرت بن سکے۔ اس کے بعد اس درود پاک کے ایک ایک حرف کے بدلے ایک ایک فرشتہ پیدا فرمائے گا۔ ہر ایک فرشتے کے تیس ہزار ساٹھ سر ہوں گے اور ہر سر پر تیس ہزار ساٹھ چہرے ہوں گے اور ہر چہرے پر تیس ہزار ساٹھ زبانیں ہوں گی اور ہر زبان تیس ہزار ساٹھ بار حمدِ خداوندی اور نعتِ رسول خدا ﷺ ادا کرتی رہے گی۔ ہر نعت دوسری نعت سے مختلف ہوگی۔ ان تمام نعتوں کا ثواب اس کے نامہ اعمال میں لکھا جائے گا جس نے ایک بار حضور پرنور ﷺ پر درود پڑھا تھا''۔ (معارج النبوۃ)

हज़रत अबु हुरैराह ؓ से मर्वी है कि जब कोई मोमिन जो हर आईना तजल्लियात, काने लाअले करामत, जमाल रूहे हयात, जमीं अल-बरकात ﷺ पर दरूद पाक भेजता है तो अल्लाह तआला एक फरिश्ते को मुक़र्र करता है जो इस दरूद पाक के तोहफे को फौरन सरकार दो आलम ﷺ के सामने ले आता है और बरमला कहता है। या रसुलल्लाह ﷺ! फलॉ बिन फलॉ या फलॉ बिन्ते फलॉ ने आप ﷺ पर एक बार दरूद पाक भेजा है। हुज़ूर ﷺ निहायत फरहत व शादमानी के साथ जवाब देते हैं। मेरी तरफ से उसे दस बार सलाम पहुँचाओ और उसे पैग़ाम दे दो कि अगर उस दस में से एक भी तेरे साथ होगा तो तू जन्नत में मेरे साथ ऐसे होगा जैसे यह सबाबाह और वस्ती ऊँगलियाँ हैं और तेरे लिए मेरी शिफाअत हलाल होगी। वह फरिश्ता रोज़ा-ए रसूल ﷺ से बारगाहे खुदा वन्दी में हाज़िर होता है और कहता है, ऐ अल्लाह। फलॉ बन्दे ने तेरे हबीब ﷺ पर एक बार दरूद पाक भेजा है। अल्लाह तआला फरमाता हैं। मेरी तरफ से दस बार हदिया सलाम भेजा जाए और उसे बशारत दी जाए कि अगर उन दस में से एक भी तेरे साथ होगा तो तुझे आग न छुऐगी। फिर अल्लाह तआला फरमाते हैं। कि मेरे बन्दे के दरूद को बहतरीन हदीया तसव्वुर किया जाए और उसे इल्लियीन में महफूज़

कर लिया जाए ताकि क़ियामत के दिन उस के लिए ज़खीरा आखिरत बन सके। उस के बाद उस दरूद पाक के एक एक हुर्फ के बदले एक एक फरिश्ता पैदा फरमाऐगा हर एक फरिश्ते के तीस हज़ार साठ सर होंगे और हर सर पर तीस हज़ार साठ चेहरे होंगे और हर चेहरे पर तीस हज़ार साठ ज़बाने होंगी और हर ज़बान तीस हज़ार साठ बार हमदे खुदा वन्दी और नाअते रसूल खुदा ﷺ अदा करती रहेगी। हर नाअत दूसरी नाअत मुखतलिफ होगी। इन तमाम नाअतों का सवाब उस के नामा-ए आमाल में लिखा जाऐगा जिस ने एक बार हुज़ूर पुर नूर ﷺ पर दरूद पढ़ा था। (मआरिज अल-नबूवत)

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى حَبِيْبِكَ مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ صَلاةً كَمَا تُصَلِّيْ بِحَسْبِ شَانِكَ

جلوۂ انوارِ وحدت، مرکزِ نورِ ہدایت، زینتِ بزمِ کثرت، جوارشِ مریضانِ محبت، صاحبِ تاجِ ختمِ نبوت ﷺ نے فرمایا! ''بے شک اللہ تعالیٰ کا ایک فرشتہ ہے۔ جس کے دو پر ہیں۔ ایک مشرق میں اور دوسرا مغرب میں جب کوئی بندے محبت بھرے انداز میں مجھ پر درود پڑھتا ہے تو وہ پانا میں غوطہ لگا تا ہے پھر اپنے پر جھاڑتا ہے تو اللہ تعالیٰ اس کے ہر قطرے سے ایک فرشتے پیدا فرماتا ہے۔ جو مجھ پر درود پڑھنے والے لیے قیامت تک استغفار کرتا رہے گا''۔(القول البدیع)

जलवा-ए अनवारे वहदत, मरकज़े नूरे हिदायत, ज़ीनते बज़्मे कसरत, जवारिशे मरीज़ाने मुहब्बत, साहिबे ताज खत्मे नबूवत ﷺ ने फरमाया! ''बे शक अल्लाह तआला का एक फरिशता है। जिस के दो पर हैं। एक मशरिक़ में और दूसरा मग़रिब में जब कोई बन्दा मुहब्बत भरे अन्दाज़ में मुझ पर दरूद पढ़ता है तो वो पानी में ग़ोता लगाता है फिर अपने पर झाड़ता है तो अल्लाह तआला इस के हर क़तरे से एक फरिशता पैदा फरमाता है। जो मुझ पर दरूद पड़ने वाले के लिए क़यामत तक अस्तग़फार करता रहेगा। (अल-क़ोल अल-बदी)

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِکْ عَلٰی حَبِیْبِکَ مُحَمَّدٍ وَّاٰلِہٖ صَلاۃً کَمَا تُصَلِّیْ بِحَسْبِ شَانِکَ

جبرائیل علیہ السلام نے خواجۂ بطحا، خواجۂ ہر دوسرا، خستہ دلوں کا سہارا ﷺ سے عرض کیا یا رسول ﷺ اللہ تعالیٰ فرماتا ہے! جو شخص آپ ﷺ پر دس مرتبہ درود بھیجتا ہے اس کے لیے میرے غضب سے امان ہوگئی۔ (القول البدیع)

जिबराईल अलैहिस्सलाम ने ख़्वाजा-ए बतहा, ख़्वाजा-ए हर दूसरा, खस्ता दिलों का सहारा ﷺ से अर्ज़ किया गया या रसूलल्लाह ﷺ अल्लाह तआला फरमाता है! जो शख़्स आप ﷺ पर दस मर्तबा दरूद भेजता है उस के लिए मेरे ग़ज़ब से अमान हो गई। (अल-क़ोल अल-बदी)

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِکْ عَلٰی حَبِیْبِکَ مُحَمَّدٍ وَّاٰلِہٖ صَلاۃً کَمَا تُصَلِّیْ بِحَسْبِ شَانِکَ

خالقِ فطرت کے حرفِ اوّل، خاصۂ خاصانِ رُسل، عقلِ کل ﷺ نے فرمایا! ''جب درود شریف پڑھنے والا درود پڑھتا ہے، تو اللہ تعالیٰ اس سے ایک عظیم پرندہ پیدا فرماتا ہے۔ جس کے ستر ہزار بازو، ہر بازو میں ستر ہزار پر، ہر پر کے ستر ہزار سر، ہر سر کے ستر ہزار چہرے، ہر چہرے کے ستر ہزار منہ، ہر منہ میں ستر ہزار زبانیں اور زبان سے ستر ہزار بولیوں میں، ہر لمحہ اللہ تعالیٰ کی تسبیح و تقدیس کرتا رہتا ہے اور یہ ثواب اس درود پاک پڑھنے والے کے نامۂ اعمال میں لکھ دیا جاتا ہے۔ یہ فرشتہ قیامت تک اس کی قبر پر کھڑا دُعا کرتا رہے گا، تو درود پڑھنے والے کی قبر بقعۂ طور باغنچۂ نور سے کستوری کی خوشبو آتی رہے گی''۔ (مطالع المسرات)

खालिक़े फितरत के हुर्फ़े अव्वल, खासेआ खासाने रसूल, अक़्ले कुल ﷺ ने फरमाया! ''जब दरूद शरीफ पड़ने वाला दरूद पड़ता है, तो अल्लाह तआला उस से एक अज़ीम परिन्दा पैदा फरमाता है। जिस के सत्तर हज़ार बाज़ू, हर बाज़ू में सत्तर हज़ार पर, हर पर के सत्तर हज़ार सर, हर सर के सत्तर हज़ार चेहरे, हर चेहरे के सत्तर हज़ार मूँह, हर मूँह

में सत्तर हज़ार ज़बाने, और हर ज़बान से सत्तर हज़ार बोलियों में, हर लम्हा अल्लाह तआला की तस्बी व तक़दीस करता रहता है और यह सवाब उस दरूद पाक पड़ने वाले के नामे आमाल में लिख दिया जाता है। यह फरीश्ते क़यामत तक उस की क़ब्र पर खड़ा दुआ करता रहेगा, तो दरूद पड़ने वाले की क़ब्र बक़ीया तोर बग़िचे नूर से कसतूरी की खुशबू आती रहेगी''। (मुतालेआ अलमुसरात)

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِکْ عَلٰی حَبِیْبِکَ مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ صَلاةً كَمَا تُصَلِّیْ بِحَسْبِ شَانِکَ

مالکِ ہر ماسوا، مشعلِ بزمِ صوفیاء، نورالھدیٰ ﷺ نے فرمایا! کہ ''میری اُمت سے ایک بھی ایسا شخص نہیں ہوگا جو مجھے یاد کرے اور مجھ پر درود پڑھے تو اس کے سارے گناہ بخشے نہ جائیں گے۔ ان گناہوں کی تعداد خواہ ریت کے ذروں جتنی کیوں نہ ہو۔''

मशअले बज़्मे सुफिया, नुरूल-हुदा ﷺ ने फरमाया! के ''मेरे उम्मत से एक भी ऐसा शख़्स नहीं होगा जो मुझे याद करे और मुझ पर दरूद पड़े तो उस के सारे गुनाह बख़्शे न जाऐंगे। उन गुनाहों की तादाद ख़्वॉ रेत के ज़र्रो जितनी क्यों न हो''।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِکْ عَلٰی حَبِیْبِکَ مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ صَلاةً كَمَا تُصَلِّیْ بِحَسْبِ شَانِکَ

رسول کریم، رؤف الرحیم ﷺ نے فرمایا! کہ ''بہشت میں سب سے پہلے جسے بہشتی لباس پہنایا جائے گا وہ حضرت ابراہیم علیہ السلام ہوں گے۔ پھر آپ علیہ السلام کے لیے عرش کے دائیں جانب ایک کرسی بچھائی جائے گی۔ آپ علیہ السلام اس پر تشریف فرما ہوں گے۔ حضرت ابراہیم علیہ السلام کے بعد مجھے نورانی لباس پہنایا جائے گا۔ صحابہ کرام نے حضور نبی کریم ﷺ سے دریافت کیا کہ یارسول اللہ ﷺ جس مقام پر آپ ﷺ جلوہ فرما ہوں گے وہاں کوئی دوسرا بھی آسکے گا؟ آپ ﷺ نے فرمایا! ہاں میرا وہ اُمتی، جو فرض کی ادائیگی کے بعد دس بار درود پاک پڑھے گا۔ ایسے شخص کو بھی میری طرح بہشتی

لباس پہنایا جائے گا۔ وہ مجھے دیکھے گا اور میں اس کو دیکھوں گا اس اُمتی کا چہرہ اس دن چودہویں کے چاند سے بھی زیادہ درخشاں ہوگا''۔ (معارج النبوۃ)

रसूले करीम, रऊफ़ुर्रहीम ﷺ ने फरमाया! के ''बहिश्त में सब से पहले जिसे बहिशती लिबास पेहनाया जाएगा वह हज़रत इब्राहीमؑ होंगे। फिर आप ؑ के लिए अर्श के दाए जानिब एक कुर्सी बिछाई जाऐगी आप ؑ उस पर तशरीफ फरमा होंगे। हज़रत इब्राहीमؑ के बाद मुझे नुरानी लिबास पहनाया जाएगा। सहाबा इकराम ने हुज़ूर नबी करीम ﷺ से दरयाफ्त किया के या रसुलल्लाह ﷺ जिस मक़ाम पर आप ﷺ जलवा फरमा होंगे वहाँ कोई दूसरा भी आ सकेगा? आपﷺ ने फरमाया। हाँ मेरा वह उम्मती, जो फर्ज़ की अदाईगी के बाद दस बार दरूद पाक पड़ेगा। ऐसे शख़्स को मेरी तरह बहिशती लिबास पहनाया जाऐगा। वह मुझे देखेगा और में उसे देखूँगा उस उम्मती का चेहरा उस दिन चोदवी के चाँद से भी ज़्यादा दरख़्शाॅ होगा''। (मआरिज अल-नबूवत)

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِکْ عَلٰی حَبِیْبِکَ مُحَمَّدٍ وَّاٰلِہٖ صَلاۃً کَمَا تُصَلِّیْ بِحَسْبِ شَانِکَ

آفتابِ ہدیٰ، بحرِ لطف وعطا، حامیٔ شاہ وگدا، دستگیرِ بےنواﷺ نے فرمایا! کہ ''اللہ تعالیٰ نے مجھے ایسی چیز عطا فرمائی ہے کہ کسی دوسرے نبی کو میسر نہیں ہوئی وہ یہ ہے کہ میری اُمت کے لیے بلند درجات عطا کیے گئے ہیں درجات مجھ پر درود پڑھنے کی وجہ سے عطا کیے گئے تھے۔ میری قبر پر ایک فرشتہ مقرر کیا گیا ہے جس کا نام ''نطروس'' ہے۔ وہ اتنا بزرگ اور جسیم ہے کہ اس کا سر تو عرش تک پہنچتا ہے اور قدم ارض سفلی میں ہوتے ہیں۔ اسی فرشتے کے اٹھارہ ہزار پر ہیں ہر پر کے نیچے اٹھارہ اٹھارہ ہزار سر ہیں۔ ہر سر میں اٹھارہ ہزار منہ اور ہر منہ میں اٹھارہ اٹھارہ ہزار زبانیں ہیں۔ ہر زبان سے اللہ کی تمجید ہوتی ہے اور مجھ پر درود پڑھنے والوں کے لیے استغفار۔ پھر ہر زبان سے ہزار ہا ہزار

نعتیں کہی جاتی ہیں مجھ پر درود پڑھتا ہے تو وہ فرشتہ اس کے درود کو محفوظ کر لیتا ہے اور اللہ تعالیٰ کی بارگاہ میں پیش کرتا ہے۔ حضور ﷺ نے اس کے بعد فرمایا! جو شخص مجھ پر درود پڑھے گا میں محمد ﷺ اس پر دس ہزار بار درود بھیجوں گا اللہ کے تمام فرشتے اس کے لیے دعا کریں گے پھر اللہ تعالیٰ اس پر دس ہزار بار درود بھیجے گا اور حکم دے گا کہ یہ تمام درود اس کے نامۂ اعمال میں درج کر لیے جائیں اور اس کے نامۂ اعمال کو اعلیٰ علیین پر مضبوط ور بوط کر دیا جائے"(معارج النبوۃ)

आफताबे हुदा, बेहरे लुत्फ व अता, हामिये शाह व गदा, दस्तकीरे बे नवा ﷺ ने फरमाया! के ''अल्लाह तआला ने मुझे ऐसी चीज़ अता फरमाई है कि किसी दूसरे नबी को मय्यसर नहीं हुई वह यह है कि मेरी उम्मत के लिए बुलन्द दरजात अता किए गए है दरजात मुझ पर दरूद पड़ने की वजह से अता किए गए थे। मेरी क़ब्र पर एक फरिशता मुक़र्रर किया गया है। जिस का नाम 'नतरूस' है। वह इतना बुजुरूग और जसीम है के उस का सर अर्श तक पहुँचता है और क़दम अर्ज़े सफली में होते हैं। इसी फरिशते के अठ्ठारा हज़ार पर हैं हर पर के नीचे अठ्ठारा अठ्ठारा हज़ार सर हैं। हर सर में अठ्ठारा हज़ार मूँह और हर मूँह में अठ्ठारा अठ्ठारा हज़ार ज़बाने हैं। हर ज़बान से अल्लाह की तमहीद होती है और मुझ पर दरूद पड़ने वालों के लिए अस्तग़फार। फिर हर ज़बान से हज़ार हज़ार नाअते कही जाती हैं मुझ पर दरूद पड़ता है तो वह फरिशता इस के दरूद को महफूज़ कर लेता है और अल्लाह तआला की बारगाह में पेश करता है। हुज़ूर ﷺ ने उस के बाद फरमाया! जो शख़्श मुझ पर दरूद पड़ेगा में मुहम्मद ﷺ उस पर दस हज़ार बार दरूद भेजूँगा अल्लाह के तमाम फरिशते उस के लिए दुआ करेंगे फिर अल्लाह तआला उस पर दस हज़ार बार दरूद भेजेगा और हुक्म देगा के यह तमाम दरूद उस के नामा-ए आमाल में दर्ज कर लिए जायें और उस नामा-ए आमाल को आला इल्लियीन पर मज़बूत-वर-बूत कर दिया जाए''। (मआरिज अल-नबूवत)

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِکْ عَلٰی حَبِیْبِکَ مُحَمَّدٍ وَّاٰلِہٖ صَلٰوۃً کَمَا تُصَلِّیْ بِحَسْبِ شَانِکَ

حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ سے مروی ہے کہ آفتابِ حجاز، چارہ ساز، خواجۂ گیتی نواز ﷺ نے فرمایا! ''مجھ پر درود بھیجنے والے کے لیے پل صراط پر ایک نور ہوگا اور جو پل صراط پر نور والا ہوگا، وہ جہنمی نہیں ہوگا''۔(مطالع المسرات)

हज़रत अब्बू हुरेराह رضی اللہ عنہ से मरवी है के आफताबे हिजाज़, चारा साज़, ख़्वाजा-ए गैती नवाज़ ﷺ ने फरमाया मुझ पर दरूद वाले के लिए पुलसेरात पर एक नूर होगा जो पुलसेरात पर नूर वाला होगा, वह जहन्नमी नहीं होगा।

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِکْ عَلٰی حَبِیْبِکَ مُحَمَّدٍ وَّاٰلِہٖ صَلٰوۃً کَمَا تُصَلِّیْ بِحَسْبِ شَانِکَ

آقائے دوعالم، تاجدارِ عرب وعجم، جلوۂ ربِّ اکرم، ابوالقاسم ﷺ کا ارشاد ہے! ''مجھ پر درود پڑھنا پل صراط پر نور ہے۔ جس شخص نے مجھ پر دن رات میں اسی مرتبہ درود بھیجا اس کے اسی سال کے گناہ بخش دیئے جائیں گے''۔(مطالع المسرات)

आक़ा-ए दो आलम, ताजदारे अरब व अजम, जलव-ए रब्बे अकरम, अबु अल-क़ासिम ﷺ का इरशाद है! ''मुझ पर दरूद पढ़ना पुलसेरात पर नूर है। जिस शख़्स ने मुझ पर दिन रात में 80 मर्तबा दरूद भेजा उस के 80 साल के गुनाह बख़्श दिए जाऐंगे''। (मुतालेआ अलमुसरात)

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِکْ عَلٰی حَبِیْبِکَ مُحَمَّدٍ وَّاٰلِہٖ صَلٰوۃً کَمَا تُصَلِّیْ بِحَسْبِ شَانِکَ

حضرت عبدالرحمٰن بن عوف رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ آرزوئے انبیائے محترم، پیکرِ خوبی وحسنِ مجسم، جانِ دوعالم، احسانِ مجسم ﷺ نے فرمایا! ''میرے پاس جبرائیل علیہ السلام آئے۔ انہوں نے کہا! یارسول اللہ ﷺ آپ ﷺ کا اُمتی، آپ ﷺ پر درود بھیجے گا

اس پر ستر ہزار فرشتے درود بھیجیں گے اور جس پر فرشتے درود بھیجیں گے وہی جنتی ہوگا''۔(مطالع المسرات)

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन ओफ ﷺ से रिवायत है के आरज़ु-ए अम्बिया-ए मोहतरम, पीकर खुबी व हुस्ने मुजस्सम, जाने दो आलम, एहसान मुजस्सम ﷺ ने फरमाया! ''मेरे पास जिबराईल ؑ आए। उन्होंने कहा! या रसुलल्लाह ﷺ आप ﷺ का जो उम्मती, आप ﷺ पर दरूद भेजेगा उस पर 70 हज़ार फरिशते दरूद भेजेंगे और जिस पर फरिशते दरूद भेजेंगे वहीं जन्नती होगा''। (मुतालेआ अलमुसरात)

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِکْ عَلٰی حَبِیْبِکَ مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ صَلاَةً کَمَا تُصَلِّیْ بِحَسْبِ شَانِکَ

آرزوئے کلیم، احسانِ تقویم، احسانِ ربِ کریم، الطاف عمیم، احسانِ عظیم ﷺ نے فرمایا!''میرے پاس حوضِ کوثر پر کئی ایسی جماعتیں آئیں گی جن کی پہچان مجھے صرف اس لیے ہوگی کہ وہ مجھ پر کثرت سے درود بھیجتے ہیں''۔(مطالع المسرات)

आरज़ु-ए कलीम, अहसाने तक़वीम, अहसाने रब्बे करीम, अलताफ अमीम, अहसाने अज़ीम ﷺ ने फरमाया! ''मेरे पास होज़े क़ोसर पर कई ऐसी जमातें आऐंगी जिन की पहचान मुझे सिर्फ इस लिए होगी के वह मुझ पर कसरत से दरूद भेजते हैं''। (मुतालेआ अलमुसरात)

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِکْ عَلٰی حَبِیْبِکَ مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ صَلاَةً کَمَا تُصَلِّیْ بِحَسْبِ شَانِکَ

حضرت انس ﷺ سے روایت ہے کہ اللہ کی برہان، چشمِ عرفان، اُمت کے پاسبان، امان بے امان ﷺ نے فرمایا! جس نے مجھ پر ہزار مرتبہ درود شریف پڑھا۔ اللہ اس کا گوشت اور اس کی ہڈیاں آگ پر حرام فرمادیں گے۔(مطالع المسرات)

हज़रत अनस ﷺ से रिवायत है के अल्लाह के बुरहान, चशमे इरफान, उम्मत के पासबान, अमान बे अमान ﷺ ने फरमाया! जिस ने

मुझ पर हज़ार मर्तबा दरूद शरीफ पढ़ा। अल्लाह उस का गोशत और उसकी हड्डियाँ आग पर हराम फरमा देगें। (मुतालेआ अलमुसरात)

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِکْ عَلٰی حَبِیْبِکَ مُحَمَّدٍ وَّاٰلِہٖ صَلٰوۃً کَمَا تُصَلِّیْ بِحَسْبِ شَانِکَ

چارۂ دردِ یتیماں، صورتِ یزداں، امیر بزم امکاں، انیس بے کساں ﷺ نے فرمایا! ''جس نے مجھ پر ایک مرتبہ درود بھیجا اللہ تعالیٰ اس پر دس مرتبہ درود بھیجے گا اور جس نے مجھ پر دس مرتبہ درود بھیجا اللہ اس پر سو مرتبہ درود بھیجے گا اور جس نے مجھ پر سو مرتبہ درود بھیجا اللہ تعالیٰ اس پر ہزار مرتبہ درود بھیجے گا اور جس نے مجھ پر ہزار مرتبہ درود بھیجا اللہ اس کا جسم آگ پر حرام فرما دے گا اور اس کو دنیا و آخرت میں سوال کے وقت قول ثابت کے ساتھ ثابت رکھے گا اور اسے جنت میں داخل فرمائے گا اور قیامت کے دن مجھ پر بھیجا ہوا اس کا درود اس حال میں آئے گا کہ اس کا نور پلِ صراط پر پانچ سو سال کی مسافت تک ہوگا اور اسے ہر درود کے بدلے جو اس نے مجھ پر بھیجا ہوگا جنت میں ایک محل عطا کرے گا۔ یہ درود کم ہو یا زیادہ''۔ (مطالع المسرات)

चारा-ए दर्दे यतीमा, सुरते यज़्दा, अमीर बज़्में इमकाॅ, अनीस बे-कसाॅ ﷺ ने फरमाया! ''जिस ने मुझ पर एक मर्तबा दरूद भेजा अल्लाह तआला उस पर दस मर्तबा दरूद भेजेगा और जिस ने मुझ पर दस मर्तबा दरूद भेजा अल्लाह उस पर सौ मर्तबा दरूद भेजेगा और जिस ने मुझ पर सौ मर्तबा दरूद भेजा अल्लाह तआला उस पर हज़ार मर्तबा दरूद भेजेगा और जिस ने मुझ पर हज़ार मर्तबा दरूद भेजा अल्लाह उस का जिस्म आग पर हराम फरमा देगा और उस को दुनिया व आखिरत में सवाल के वक़्त क़ौल साबित के साथ साबित रखेगा और उसे जन्नत में दाखिल फरमाऐगा और क़यामत के दिन मुझ पर भेजा हुआ उस का दरूद इस हाल में आऐगा के उस का नूर पुलसेरात पर पाँच-सौ साल की मुसाफत तक होगा और अल्लाह उसे हर दरूद के बदले जो उस ने मुझ पर भेजा होगा जन्नत में एक महल अता करेगा। यह दरूद कम हो या ज़्यादा''। (मुतालेआ अलमुसरात)

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِکْ عَلٰی حَبِیْبِکَ مُحَمَّدٍ وَّاٰلِہٖ صَلٰوۃً کَمَا تُصَلِّیْ بِحَسْبِ شَانِکَ

حضرت ابن عباس رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ پیکرِ حسنِ جاں فزا، بحرِ لطف وعطا، روحِ مہر وفا، پیکر شرم وحیا ﷺ نے فرمایا! ''جس شخص نے کہا! اللہ تعالیٰ ہماری طرف سے حضور سید عالم ﷺ کو وہ جزا عطا فرمائے جس کے آپ ﷺ اہل ہیں۔ اس نے لکھنے والوں (فرشتوں) کو ایک ہزار صبح کے لیے مشقت میں ڈال دیا''۔ (مطالع المسرات)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ से रिवायत है के पेकरे हुस्ने जाँ फज़ा, बहरे लुत्फ व अता, रूहे महर वफा, पेकरे शर्म व हया ﷺ ने फरमाया! ''जिस शख़्स ने कहा। अल्लाह तआला हमारी तरफ से हुज़ूर सय्यदे आलम ﷺ को वो जज़ा अता फरमाए जिस के आप ﷺ अहल हैं। उस ने लिखने वालो (फरिश्तों) को एक हज़ार सुबह के लिए मुशक़्क़त में डाल दिया''। (मुतालेआ अलमुसरात)

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِکْ عَلٰی حَبِیْبِکَ مُحَمَّدٍ وَّاٰلِہٖ صَلٰوۃً کَمَا تُصَلِّیْ بِحَسْبِ شَانِکَ

تنویرِ عرفانِ خدا، درِّ بحرِ صفا، چاند سا مکھڑا، ﷺ سے عرض کیا گیا! کہ ''آل محمد ﷺ کون ہیں، جن کی محبت، تعظیم اور خدمت کا ہمیں حکم دیا گیا ہے؟ فرمایا! صاف دل باوفا، جو مجھ پر مخلصانہ ایمان لائے۔ عرض کیا گیا! کہ ان کی علامتیں کیا ہیں؟ فرمایا! میری محبت کو ہر محبوب پر ترجیح دینا اور دل کو اللہ تعالیٰ کے ذکر کے بعد میرے ذکر سے مشغول رکھنا اور ایک روایت میں ہے کہ! ان کی علامت یہ ہے کہ ہمیشہ میرا ذکر کرتے ہیں اور مجھ پر بکثرت درود بھیجتے ہیں''۔ (مطالع المسرات)

तनवीरे इरफाने खुदा, दुर्रे बहरे सफा, चाँद सा मुखड़ा, ﷺ से अर्ज़ किया गया! कि ''आले मुहम्मद ﷺ कौन हैं, जिन की मुहब्बत, ताज़ीम और खिदमत का हमें हुक्म दिया गया है? फरमाया! साफ दिल ब-वफा जो मुझ पर मुख़्लिसाना ईमान लाए। अर्ज़ किया गया। कि इन की

अलामतें क्या हैं? फरमाया! मेरी मुहब्बत को हर महबूब पर तरजीह देना और दिल को अल्लाह तआला के ज़िक्र के बाद मेरे ज़िक्र से मशगूल रखना और एक रिवायत में है कि। उन की अलामत यह है कि हमेशा मेरा ज़िक्र करते हैं और मुझ पर ब-कसरत दरूद भेजते हैं। (मुतालेआ अलमुसरात)

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى حَبِيْبِكَ مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ صَلاةً كَمَا تُصَلِّيْ بِحَسْبِ شَانِكَ

جلوۂ ربِّ اکرم، جگر گوشۂ کانِ کرم، جلالِ عظمتِ آدم ﷺ نے ارشاد فرمایا! ''کوئی بندہ مجھ پر درود پڑھتا ہے تو فرشتہ اس درود کو لے کر اوپر جاتا ہے اور اللہ کی بارگاہ میں پہنچاتا ہے اللہ فرماتا ہے! اس درود پاک کو میرے بندے کی قبر میں لے جاؤ۔ یہ اپنے پڑھنے والے کے لیے استغفار کرتا رہے گا اور اس کی آنکھیں اسے دیکھ کر ٹھنڈی ہوتی رہیں گی''۔(القول البدیع)

जलव-ए रब्बे करम, जिगर गोशा-ए काने करम, जलाले अज़्मते आदम ﷺ ने इरशाद फरमाया! ''कोई बन्दा मुझ पर दरूद पढ़ता है तो फरिश्ता इस दरूद को लेकर ऊपर जाता है और अल्लाह की बारगाह में पहुँचता है। अल्लाह फरमाते हैं! इस दरूद पाक को मेरे बन्दे की क़ब्र में ले जाओ। यह अपने पढ़ने वाले के लिए अस्तग़फार करता रहेगा और इस की आँखें उसे देख कर ठण्डी होती रहेंगी''। (अल-क़ोल अल-बदी)

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى حَبِيْبِكَ مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ صَلاةً كَمَا تُصَلِّيْ بِحَسْبِ شَانِكَ

حامئ شاہ وگدا، عکسِ نورِ خدا، حامئ ہر بے نوا ﷺ نے فرمایا! جو شخص مجھ پر دن میں پچاس مرتبہ درود بھیجے گا، میں قیامت کے دن اس سے مصافحہ کروں گا۔(سعادۃ الدارین)

हामीए शाह व गदा, अकसे नूरे खुदा, हामीए हरबे नवा ﷺ ने फरमाया! जो शख्स दिन में मुझ पर पचास मर्तबा दरूद भेजेगा, मैं क़यामत के दिन उस से मुसाफा करूँगा। (सआदत अरीन)

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِکْ عَلٰی حَبِیْبِکَ مُحَمَّدٍ وَّاٰلِہٖ صَلَاۃً کَمَا تُصَلِّیْ بِحَسْبِ شَانِکَ

سبیلِ رحمتِ یزداں، خلیلِ خوش نہاداں، عطائے رحمان ﷺ نے فرمایا! بے شک تم مجھ پر اپنے ناموں اور چہروں کے ساتھ پیش کیے جاتے ہو پس مجھ پر بہتر درود بھیجا کرو۔(القول البدیع)

सबीले रहमते यज़्दा, खलीले खुश नेहादाँ, अताऐ रहमान ﷺ ने फरमाया! बेशक तुम मुझ पर अपने नामों और चेहरों के साथ पेश किये जाते हो पस मुझ पर बेहतर दरूद भेजा करो। (अल-क़ोल अल-बदी)

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِکْ عَلٰی حَبِیْبِکَ مُحَمَّدٍ وَّاٰلِہٖ صَلَاۃً کَمَا تُصَلِّیْ بِحَسْبِ شَانِکَ

حبیبِ ربِ یگانہ، حاملِ انوارِ کریمانہ، یکتائے زمانہ ﷺ نے فرمایا! ''فرائض کی ادائیگی کا پختہ عزم کرلو کہ اس کا ثواب فی سبیل اللہ بیس غزوات سے بڑا ہے اور بے شک مجھ پر ایک مرتبہ درود بھیجنا ان سب کے برابر ہے''۔(القول البدیع)

हबीबे रब्बे यगाना, हामिले अनवारे करीमाना ﷺ ने फरमाया! फराईज़ की अदाईगी का पुख़्ता अज़्म कर लो के इस का सवाब फी-सबीलिल्लाह बीस ग़ज़्वात से बड़ा है और बे-शक मुझ पर एक मर्तबा दरूद भेजना इन सब के बराबर है''। (अल-क़ोल अल-बदी)

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِکْ عَلٰی حَبِیْبِکَ مُحَمَّدٍ وَّاٰلِہٖ صَلَاۃً کَمَا تُصَلِّیْ بِحَسْبِ شَانِکَ

حضرت علی رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ خلق کے سرور، غریب پرور، فیض کے سمندر، خیر البشر نے ﷺ ارشاد فرمایا! ''کہ جس نے اسلام لانے کے بعد حج بیت اللہ کیا اور حج کے بعد غزوہ میں شرکت کی، اللہ اس کے غزوہ کا ثواب چارسو بار حج خانہ کعبہ کے ثواب کے برابر عطا فرماتا ہے۔ یہ سن کر ضعیف اور سن رسیدہ صحابیوں کے دلوں پر رنج و

الم کا پہاڑ ٹوٹ پڑا کہ واحسرتا! جوانی باقی نہ رہی۔ حج تو بجالا سکتے ہیں لیکن شرکت غزوہ کی تاب و طاقت نہیں۔ ہم لوگ تو اس عظیم کارِ ثواب سے محروم رہ گئے۔ سرور کونین ﷺ کے عاشقوں اور جاں نثاروں کی تسکین کی خاطر، حضرت جبرائیل علیہ السلام حاضر خدمت ہو کر کہنے لگے! کہ اے رسول خدا ﷺ اللہ تعالیٰ فرماتا ہے! کہ جو شخص آپ ﷺ پر از روئے محبت و عظمت ایک بار درود پڑھے گا۔ اللہ تعالیٰ اس ایک بار درود پڑھنے کے ثواب کو، ایسے چار سو غزوات کے ثواب کے برابر کر دے گا، جن غزوات کا ہر غزوہ چار سو بار حج بیت الحرام کا ثواب رکھتا ہوگا''۔(القول البدیع)

हज़रत अली ﷺ से रिवायत है के ख़्लक़ के सरवर, ग़रीब प्रवर, फेज़ के समुन्द्र, ख़ैरूल बशर ने ﷺ इरशाद फरमाया! कि ''जिस ने इस्लाम लाने के बाद हज बेतुल्लाह किया और हज के बाद ग़ज़्वा में शिरकत की, अल्लाह इस के ग़ज़्वे का सवाब चार सौ बार हज खाना काबा के सवाब के बराबर अता फरमाता है। यह सुन कर ज़ईफ और सन रसीदा सहाबियों के दिलों पर रंज व अलम का पहाड़ टूट पड़ा के व-अहसरता! जवानी बाक़ी न रही। हज तो बजा ला सकते हैं लेकिन शिर्कत ग़ज़्वा की ताब व ताक़त नहीं। हम लोग तो उस अज़ीम कारे सवाब से महरूम रह गए। सरवर कोनेन ﷺ के आशिक़ों और जाँ निसारों की तसकीन के खातिर, हज़रत जिबरईल हाज़िरे علیہ السلام खिदमत हो कर कहने लगे! के ऐ रसूले खुदा ﷺ अल्लाह तआला फरमाता है! के जो शख़्स आप ﷺ पर आरज़ू-ए मुहब्बत व अज़्मत एक बार दरूद पड़ेगा। अल्लाह तआला इस एक बार दरूद पड़ने के सवाब को, ऐसे चार सौ ग़ज़्वात के सवाब के बराबर कर देगा, जिन ग़ज़्वात का हर ग़ज़्वा चार सौ बार हज बेतुल हराम का सवाब रखता होगा''। (अल-क़ोल अल-बदी)

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِکْ عَلٰی حَبِیْبِکَ مُحَمَّدٍ وَّاٰلِہٖ صَلٰوۃً
کَمَا تُصَلِّیْ بِحَسْبِ شَانِکَ

صاحبِ لوح وقلم، مرادِ آدم، محبوبِ ہر دو عالم، شمع بزم دو عالم ﷺ نے فرمایا! کہ ''جو شخص کلمہ پڑھتا ہے اور اس کے بعد **اللّٰھم صل علٰی محمدٍ و علٰی اٰلِ**

محمدٍ و بارك وسلم کہے گا، تو یہ جملہ اس کے منہ سے ایک سبز مرغ کی طرح نکلے گا۔ اس کے دو پر ہوں گے۔ اتنے اتنے بڑے کہ اگر پھیلا دے تو ایک مشرق اور دوسرا مغرب تک پھیل جائے۔ پھر اس پرندے کی آواز بادل کے گرجنے کی طرح سنائی دے گی۔ اس کی پرواز عرش معلیٰ تک ہوگی۔ عرش معلیٰ اس کی آواز سے کانپ جائے گا۔ اللہ تعالیٰ حکم کرے گا، اے پرندے! خاموش ہوجا۔ وہ پرندہ کہے گا! کس طرح چپ ہو رہوں جبکہ میرے کہنے والے کو تیری رحمت نے ابھی تک نہیں بخشا۔ یہ حکم تین بار ہوگا اور وہ پرندہ تین بار یہی سوال کرے گا۔ اللہ کا فرمان ہوگا! اب چپ ہو جا کہ تیرے کہنے والے کو میں نے بخش دیا اور میری رحمت نے اسے اپنے دامن میں لے لیا''۔ (معارج النبوۃ)

साहिबे लोहे-क़लम व क़लम, मुरादे आदम, महबूबे हर दो आलम, शमा बज़्मे दो आलम ﷺ ने फरमाया! के ''जो शख़्स कलमा पड़ता है और उस के बाद **اللّٰھم صل علی محمدٍ و علی اٰلِ محمدٍ و بارك وسلم** कहेगा तो यह जुमला उस के मुँह से सब्ज़ नूर की तरह निकलेगा। उस के दो पर होंगे। इतने इतने बड़े के अगर फेला दिए तो एक मशरिक़ और दूसरा मग़रिग तक फेल जाए। फिर उस परिन्दे की आवाज़ बादल के गरजने की तरह सुनाई देगी। उस की प्रवाज़ अर्शे मोअला तक होगी। अर्शे मोअला उस की आवाज़ से काँप जाऐगा। अल्लाह तआला हुक्म करेगा, ऐ परिन्दे! खामोश होजा। वह परिन्दा कहेगा! किस तरह चुप हो रहूँ जब के मेरे कहने वाले को तेरी रहमत ने अभी तक नहीं बख़्शा। यह हुक्म तीन बार होगा वह परिन्दा तीन बार यही सवाल करेगा। अल्लाह का फरमान होगा! अब चुप हो जा के तेरे कहने वाले को मेने बख़्श दिया और मेरे रहमत ने उसे अपने दामन में ले लिए''। (मआरिज अल-नबूवत)

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِکْ عَلٰی حَبِیْبِکَ مُحَمَّدٍ وَّاٰلِہٖ صَلَاۃً کَمَا تُصَلِّیْ بِحَسْبِ شَانِکَ

حضرت امیر المؤمنین حضرت عمر فاروق رضی اللہ عنہ کی روایت ہے کہ میں نے ایک دن

شہنشاہِ ابرار، مدنی تاجدار، بے یاروں کے مددگار ﷺ کی بارگاہ میں عرض کی یا روسول اللہ ﷺ آپ کی اُمت کا تحفہ تو درود پاک ہے جو آپ ﷺ کی بارگاہ میں پیش کیا جاتا ہے آپ ﷺ کی طرف سے اس تحفہ کے جواب میں کیا عطا کیا جاتا ہے؟ آپ ﷺ نے فرمایا عمر تم نے بہت اچھا سوال کیا۔ میری اُمت کا تحفہ تو مجھ پر درود پاک ہے مگر قیامت کے دن یہی درود پاک میری طرف سے اُمت کو تحفہ دیا جائے گا۔(معارج النبوۃ)

हज़रत अमीरूल मोमिनीन हज़रत उमर फारूक़ ﷺ की रिवायत है कि मैं ने एक दिन शेहनशाहे अबरार, मदनी ताजदार, बेयारों के मद्दगार ﷺ की बारगाह में अर्ज़ की या रसूलल्लाह ﷺ आप की उम्मत का तोहफा तो दरूद पाक है जो आप ﷺ की खिदमत में पेश किया जाता है आप ﷺ की तरफ से उस तोहफे के जवाब में के अता किया जाता है? आप ﷺ ने फरमाया उमर तुम ने बहुत अच्छा सवाल किया। मेरी उम्मत का तोहफा तो मुझ पर दरूद पाक है मगर क़यामत के दिन यही दरूद पाक मेरी तरफ से उम्मत को तोहफा दिया जाऐगा। (मआरिज अल-नबूवत)

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِکْ عَلٰی حَبِیْبِکَ مُحَمَّدٍ وَّاٰلِہٖ صَلاۃً کَمَا تُصَلِّیْ بِحَسْبِ شَانِکَ

شاہِ جن و بشر، غریب پرور، فقر کے داور ﷺ نے فرمایا!''جو شخص اپنی زندگی میں مجھ پر سلام وصلوٰۃ بھیجے گا تو اس کے مرنے کے بعد اللہ اپنی ساری مخلوقات کو حکم دے گا کہ اس شخص کے لیے دعائے رحمت طلب کی جائے''۔(معارج النبوۃ)

शाहे जिन व बशर, ग़रीब प्रवर, फिक़र के दावर ﷺ ने फरमाया! ''जो शख़्स अपनी ज़िन्दगी में मुझ पर सलाम व सलात भेजेगा तो उस के मरने के बाद अल्लाह अपनी सारी मख़लूक़ात को हुक्म देगा के इस शख़्स के लिए दुआए रहमत तल्ब की जाए''। (मआरिज अल-नबूवत)

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِکْ عَلٰی حَبِیْبِکَ مُحَمَّدٍ وَّاٰلِہٖ صَلاۃً کَمَا تُصَلِّیْ بِحَسْبِ شَانِکَ

قلب کے مرہم، گیسوئے پرخم، گلستانِ کرم ﷺ نے فرمایا! کہ ''اللہ تعالیٰ نے ایک فرشتہ پیدا فرمایا ہے۔ اس کا نام عزرائیل ہے۔ قیامت کے دن یہ فرشتہ اپنے پر پھیلائے گا اور پل صراط پر بچھا دے گا اور اعلان کرے گا، جس شخص نے رحمتِ کونین ﷺ پر درود پاک پڑھا تھا میرے پروں پر سے گزرتا جائے''۔ (معارج النبوۃ)

क़ल्ब के मरहम, गैसु-ए पुरखम, गुलिस्ताने करम ﷺ ने फरमाया! के ''अल्लाह तआला ने एक फरिशता पैदा फरमाया है। उस का नाम इज़राईल है। क़यामत के दिन यह फरिशता अपने पर फैलाऐगा और पुलसेरात पर बिछा देगा और ऐलान करेगा, जिस शख़्स ने रहमते कोनेन ﷺ पर दरूदे पाक पड़ा था मेरे परो पर से गुज़रता जाए''। (मआरिज अल-नबूवत)

وظیفہ درودِ معراج

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِکْ عَلٰی حَبِيبِکَ مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ صَلاَةً کَمَا تُصَلِّيْ بِحَسْبِ شَانِکَ

اگر کوئی ۳۱۳ مرتبہ اس درود پاک کو ہمیشہ ورد میں رکھے:۔

۱۔ انوار کثیرہ حاصل ہوتے ہیں۔
۲۔ بہت سے اسرار منکشف ہوجاتے ہیں۔
۳۔ حضور نبی اکرم ﷺ کی زیارت خواب میں ہوجاتی ہے۔
۴۔ قطب کے درجے تک پہنچنے کا ذریعہ ہے۔
۵۔ باطنی اور ظاہری رزق بسہولیت میسر آتا ہے۔
۶۔ نفس شیطان اور تمام دشمنوں پر اللہ تعالیٰ کی مدد سے غالب آجاتا ہے۔
۷۔ اس کے خواص بے شمار اور اَن گنت ہیں۔
۸۔ ایسے انوار اور بھلائیاں دیکھ کر ان کی قدر اللہ تعالیٰ کے سوا کوئی نہیں جانتا ہے۔
۹۔ یہ درود انوار و اسرار و معرفت کی کنجی ہے۔ جو شخص اس درود کو پڑھیگا اس پر اسرار و

ربانی کی راہ کھل جائینگی، یہ درود شریف ایک طرح کا اسمِ اعظیم ہے اور اس کو پڑھنے والے کا مقامِ صداقت سے نوازتا ہے۔

अगर काई 313 मर्तबा इस दरूद पाक को हमेशा विर्द में रखे।

1. अनवार कसीरा हासिल होते हैं।
2. बहुत से इसरार मुंकशिफ हो जाते हैं।
3. हुज़ूर नबी-ए करीम ﷺ की ज़ियारत ख़्वाब में हो जाती है।
4. क़ुतब के दर्जे तक पहुँचने का ज़रिया है।
5. बातनी और ज़ाहिरी रिज़्क़ ब-सहुलियत मयस्सर आता है।
6. नफ़्स शैतान और तमाम दुशमनों पर अल्लाह की मदद् से ग़ालिब आ जाता है।
7. उस के ख़्वास बे शुमार और अन गिनत हैं।
8. ऐसे अनवार और भलाईयाँ देख कर उन की क़द्र अल्लाह तआला के सिवा कोई नहीं जानता है।
9. यह दरूद अनवार व इसरार व मारफत की कुंजी है। जो शख़्स इस दरूद को पड़ेगा उस पर इसरार रब्बानी की राहें खुल जाऐंगी, यह दरूद शरीफ एक तरह का इस्मे आज़म है और इस को पड़ने वाले का मक़ाम सदाक़त से नवाज़ता है।

☆☆☆

درودِ معراج برائے قضائے حاجات

منقول ہے کہ جو بندہ بارہ رکعت میں سورہ فاتحہ آیت الکرسی وسورۂ اخلاص بڑھے اِس کے بعد یہ دُعا پڑھے۔

سُبُحَانَ الَّذِیُ لَیُسَ الُعِزَّۃُ وَقَالَ بِہٖo سُبُحَانَ الَّذِیُ تَعَطَّفَ بِالُمَجُدِ وَتَکَرَّمَ بِہٖ سُبُحَانَ الَّذِیُ اَحُصٰی کُلَّ شَیُءٍ بِعِلُمِہٖo سُبُحَانَ الَّذِیُ لَایَنُبَغِیُ التَسُبِیُحُ اِلَّا لَہٗ o سُبُحَانَ الُمَنِّ وَالُفَضُلِ o سُبُحَانَ ذی الُعِزِّ وَالُکَرَمِ o سُبُحَانَ ذِی الطَّوُلِ وَالنِّعَمِ اَسُئَلُکَ

بِمَعَاقِدِ الْعِزِّ مِنْ عَرْشِکَ وَمُنْتَھٰی الرَّحْمَۃِ مِنْ کِتَابِکَ وَبِاسْمِکَ الْعَظِیْمِ الْاَعْظَمِ وَجَدِّکَ الْاَعْلٰی وَکَلِمَاتِکَ التَّامَّاتِ کُلِّھَا لَایُجَاوِزُ ھُنَّ بِرٌّ وَّلَافَاجِرٌ اَنْ تُصَلِّیْ عَلٰی مُحَمَّدٍ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَاo

اُس کے بعدایک سو گیارہ بار درودِمعراج پڑھے پھر خدا تعالیٰ سے وہ سوال کرے جس میں گناہ نہیں اَنْ تَقْضِیَ حَاجَتِیْ ھٰذِہٖ اوراس حاجت کا ذکر کرے اللہ تعالیٰ روا فرمائے وہب کہتے ہیں ہمیں پہنچا ہے یہ ترکیب اپنے بیوقوفوں اور جاہلوں کو نہ سکھاؤ کی گناہوں پر دلیری نہ کریں۔

بارہ رکعت قضائے حاجت کی پڑھیں بعد سلام کے دوسو گیارہ بار درودِمعراج پڑھیں پھر سجدے میں سورہ فاتحہ سات بار، آیت الکرسی سات بار لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَاشَرِیْکَ لَہُ الْمُلْکُ لَہُ الْحَمْدُ وَھُوَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ دس بار پڑھ کر پھر یہ کہیں اَللّٰھُمَّ اِنِیّ اَسْئَلُکَ مُنْتَھٰی الرَّحْمَۃِ مِنْ کِتَابِکَ وَاسْمِکَ الْاَعْظَمِ وَجَدِّکَ اَعْلٰی وَکَلِمَاتِکَ الْعِیْمَۃَ پھر اپنی حاجت مانگیں۔ اِس دعا کو بیوا قوفوں کو نہ سکھاؤ کہ وہ اس کے ذریعہ دعا مانگے گے تو قبول ہونگی۔

چار رکعت اِس طرح پڑھیں پہلی رکعت میں سورپ فاتحہ کے بعد سورہ اخلاص دس بار، دوسری رکعت میں بیس بار تیسری اور چوتھی میں چالیس بار پڑھیں، بعد سلام کے درودِمعراج اکیاون بار اور پچاس بار سورہ اخلاص اور ستر بار لا حولہ ولا قوۃ اِلَّا باللّٰہ پڑھیں۔ پھر اکیاون بار درودِمعراج پڑھیں عبداللہ فرماتے ہیں یہ طریقہ احمقوں کو نہ سکھائیں کہ گناہوں پر دلیری کریں۔

کسی بھی دینی و دنیاوی مقصد کے لیے درودِمعراج پانچ سو گیارہ بار اکتالیس دن کر پڑھیں انشاءاللہ مقصد میں کامیابی ہوگی۔

☆☆☆

दरूदे मेराज बराए कज़ाऐ हाजात

मन्कूल है कि जो बन्दा 12 रकअत में सूरह फातिहा आयतल कुर्सी व सूरह इख़्लास पढ़े उसके बाद ये दुआ एक बार पढ़े।

سُبْحَانَ الَّذِیْ لَبِسَ الْعِزَّةَ وَقَالَ بِهٖ o سُبْحَانَ الَّذِیْ تَعَطَّفَ بِالْمَجْدِ وَتَكَرَّمَ بِهٖ سُبْحَانَ الَّذِیْ اَحْصٰی كُلَّ شَیْءٍ بِعِلْمِهٖ o سُبْحَانَ الَّذِیْ لَایَنْبَغِیْ التَسْبِیْحُ اِلَّا لَهٗ o سُبْحَانَ الْمَنِّ وَالْفَضْلِ o سُبْحَانَ ذِی الْعِزِّ وَالْكَرَمِ o سُبْحَانَ ذِی الطَّوْلِ وَالنِّعَمِ اَسْئَلُكَ بِمَعَاقِدِ الْعِزِّ مِنْ عَرْشِكَ وَمُنْتَهٰی الرَّحْمَةِ مِنْ كِتَابِكَ وَبِاِسْمِكَ الْعَظِیْمِ الْاَعْظَمِ وَجَدِّكَ الْاَعْلٰی وَكَلِمَاتِكَ التَّامَّاتِ كُلِّهَا لَایُجَاوِزُ هُنَّ بِرٌّ وَّلَافَاجِرٌ اَنْ تُصَلِّیَ عَلٰی مُحَمَّدٍ صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ o

उस के बाद 111 बार दरूदे मेराज पढ़े फिर खुदा तआला से वह सवाल करे जिसमें गुनाह नहीं जैसे कहे **اَنْ تَقْضِیَ حَاجَتِیْ هٰذِهٖ** और इस हाजत का ज़िक्र करे अल्लाह तआला रवा फरमाए। वहब कहते हैं हमें पहुँचा है कि यह तरकीब अपने बेवकूफों और जाहिलों को न सिखाओ कि गुनाहों पर दिलैरी न करे।

12 रकअत कज़ाऐ हाजत की पढ़े बाद सलाम 211 बार दरूदे मेराज पढ़े फिर सजदे में फातिहा सात बार आयतल कुर्सी सात बार **لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَاشَرِیْكَ لَهٗ الْمُلْكُ لَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ** दस बार पढ़ फिर कह **اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ مُنْتَهٰی الرَّحْمَةِ مِنْ كِتَابِكَ وَاسْمِكَ الْاَعْظَمِ وَجَدِّكَ اَعْلٰی وَكَلِمَاتِكَ الْعِيْمَةَ** फिर अपनी हाजत मांग फिर इस दुआ को बेवकूफों को न सिखाओं कि वे इसके ज़रिए दुआ मांगेगे तो कुबूल होंगी। अहमद बिन

हर्ब व इबराहीम बिन अली व अबु ज़करिय्या व हाकिम ने कहा हमने इसका तजुर्बा किया तो हक़ पाया। फ़क़ीर कहता है फ़क़ीर ने भी कुछ बार तजुर्बा किया तीर बे ख़ता यहाँ तक कि कुछ अजिज़्ज़ा के मर्ज़ को इमतिदाद शदीद व इश्तदादीद हुआ यहाँ तक कि एक दिन बिल्कुल नज़अ के आसार तारी हो गए। सब रिश्तेदार रोने लगे फ़क़ीर इन सब को रोता छोड़कर दरवाज़ए करीम पर हाज़िर हुआ। यह नमाज़ पढ़ी इसके बार मरीज़ की तरफ़ चला वसवसा था कि शायद कि खबर नोअ दगर सुनने में आए वहाँ गया तो बहमदु लिल्लाह तआला मरीज़ को बैठा बातें करता पाया। मर्ज़ जाता रहा। कुछ दिन में ताक़त आ गयी व लिल्लाहिल हम्द। इसकी कामिल तरकीब पंच सूरत रिजवियह में लिखी है।

चार रकअत इस तरह पढ़े पहली रकअत में सूरह फातिहा के बाद सूरह इख़्लास 10 बार, दूसरी रकअत में 20 बार, तीसरी और चोथी रकअत में 40 बार पढ़े बाद सलाम के दरूदे मेराज 51 बार, 50 बार सूरह इख़्लास और 70 बार ''ला होला वला कुवता'' पढ़े फिर 51 बार दरूदे मेराज, अब्दुल्लाह फरमाते हैं यह तरीक़ा अहमक़ों को न सिखाऐं कि गुनाहों पर दिलेरी करें।

किसी भी दीनी या दुनियावी मक़सद के लिये 511 बार 41 दिन तक पढ़े इंशा अल्लाह मक़सद में कामियाबी होगी।

☆☆☆